लगाया गया, इससे आदिवासियों की समस्याएं और बढ़ गईं।

- सरकार ने आरक्षित वनों की स्थापना कर, **लकड़ी के उपयोग और चराई को प्रतिबंधित कर वन क्षेत्रों पर आदिवासी अधिकारों को सीमित कर दिया।**
- **पुलिस, व्यापारियों और साहूकारों** (उनमें से अधिकांश 'बाहरी लोगों') द्वारा शोषण ने आदिवासियों के कष्टों को और बढ़ाया।
- उपनिवेशवाद के विस्तार के साथ, **ईसाई मिशनरी इन क्षेत्रों में आए** और उनकी गतिविधियों ने आदिवासियों के पारंपरिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप किया।

○ **पूर्वोत्तर सीमांत की जनजातियों के आंदोलन**

- उनके विद्रोह अक्सर **भारतीय संघ के भीतर राजनीतिक स्वायत्तता या पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में थे।**
- ये **आंदोलन वन-आधारित या कृषि विद्रोह नहीं थे**, क्योंकि भूमि और वन क्षेत्र, आमतौर पर इन आदिवासियों के नियंत्रण में थे।
- अंग्रेजों के विरुद्ध सीमांत जनजातीय विद्रोह **गैर-सीमांत जनजातीय आंदोलनों की तुलना में लंबे समय तक जारी रहा।**

- **भारत की जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली कुछ लोकप्रिय भाषाएँ इस प्रकार हैं:** भतरी, भीली, हल्बी, हो, कुई, कोलामी, कुई, कोंडा, कोया, गोंडी, उरांव/कुरुख, पारजी आदि।

भारत में आदिवासी आंदोलनों के मुद्दे

- **आदिवासी विद्रोह शुरू से ही प्रबल नहीं थे।** इसका कारण यह था कि उनके पास संघर्ष के लिए पुराने हथियार थे, जिनका मुकाबला उनके विरोधियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले आधुनिक हथियारों और तकनीकों से था।
- अधिकांश विद्रोह **प्रकृति में स्थानीयकृत** थे और उनमें अखिल भारतीय भागीदारी का अभाव था।
- विद्रोह में समन्वय और सुनियोजन का अभाव था।

भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह

नाम	उद्गम स्थान	घटनाएं	परिणाम
पहाड़िया (1778)	राज महल पहाड़ियाँ	अंग्रेजों द्वारा उनके क्षेत्र में विस्तार करने पर, वीर पहाड़ियों ने विद्रोह कर दिया।	इनके क्षेत्र को दामिन-ए-कोह क्षेत्र घोषित करके अंग्रेजों को मजबूरन शांतिपूर्ण तरीके से यहाँ से लौटना पड़ा।
चुआर विद्रोह (जिसे जंगलमहल आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है)	मिदनापुर जिले में 1776-1772 ई. और 1795-1816 ई. के मध्य	• **अकाल, लगान की बढ़ती मांग और आर्थिक तंगी** ने चुआर जनजातियों को हथियार उठाने के लिए मजबूर कर दिया था। • सबसे महत्वपूर्ण विद्रोह 1798 ई. में **दर्जन सिंह** के नेतृत्व में शुरू हुआ।	इस विद्रोह का अंग्रेजों द्वारा निर्दयता से दमन किया गया था।
कोल विद्रोह (1831)	छोटानागपुर	• कोल सरदारों से बाह्य लोगों जैसे कि हिन्दू, सिख, मुस्लिम किसानों और साहूकारों को बड़ी मात्रा में भूमि हस्तांतरित की गई। • ब्रिटिश न्यायिक और राजस्व नीतियों ने कोल समुदाय की पारंपरिक सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया। • प्रसिद्ध नेता: **बुद्धो भगत।**	व्यवस्था को बहाल करने के लिए बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान चलाया गया।
हो और मुंडा विद्रोह (1820-1837)	सिंहभूम	• पराहाट के राजा ने हो जनजातियों को अधिग्रहण के खिलाफ़ विद्रोह करने के लिए संगठित किया था। • बाद में, 1831 ई. में, नई कृषि राजस्व	• यह विद्रोह 1832 ई. में समाप्त हो गया था, लेकिन हो लोगों की विद्रोही गतिविधियां 1837 ई. तक जारी रहीं।

© Vision IAS